खेति अपनी संस्कृति

आजकल हमारे समाज पर खेत में काम करने वाले लोग बहुत कम है। खेति से टीवि और फोण पर हमारा संस्कृति बदल गया है। खेतों बरबाद करकर बड़ी-बड़ी फॉक्टरियों बनाते है। ऐसे तरह खेतों को बरबाद करके जाए तो हमारा भारत की हालत बहुत कतरनाक होगा।

पिछले हफ्ते में दिल्ली पर एक घटना हुआ था। मलिन धुआ के कारण सबी लोग घर के अंदर से बाहर नही आया। इसका कारण खेतों को नाश करना और पेड़ों को काटना है। ये धुए के कारण कई लोगों को बीमारी पड़ी। खेतों ऐसे तरह विनाश नही करा तो दिल्ली ये वायु मलिनीकरण से बच सकता होगा।

Item Code: 645 Participant Code: 331

जुलई पर हमारा केरल में एक घटना हुआ था। वयनाड पर ता यह घटना। वहा कई लोग मरा। परियावरण के बरबाद करने से हि कई लोग मरा। इसकि कारण मनुष्य हि है। चट्टानों को तोडना, पेडों को काटना यह सब इसका उदाहरण है।

भारत आज़ादि होने से पिलें सब लोग का काम खेत पर ता। हमारा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा ता कि "खेति से हि मनुष्य को आगे बढ सकता है"। पुरातन काल में खेति कि बिना भोजन नही ता। खेति से मिली चीज़ों से खाकर हमें कोई समस्या नही होगा। पुरातन काल के लोगों हजारों साल तक अपना जिंदगी आगें बढाते थे। इसका एक कारण खेति है।

गाँधी ने खेतों पर काम करने वाले के लिए कई सत्याग्रह करा ता। गाँधी

को पता ना खेति का महत्व। उन्नीसों सन्नह का चंपारण सत्याग्रह और अहमदाबाद कौटन मिल घटना। गाँधी ने खेति के संरक्षण के लिए सदा काम काम करता था।

खेति के संरक्षण के लिए भारत और केरल सरकार बहुत काम करता है। पर अभी लोगो को खेत पर काम करने का तात्पर्य नहीं है। सबी पैसे के पीछे भाग रहा है। पर खेती अपनी संस्कृति मानकर कई लोग भी खेत पर काम करता है।

जून पाँच दुनिया सब पर्यावरण दिन मनाता है। सिर्फ उसी दिन सब खेतों और पर्यावरण का संरक्षण करता है। ऐसे नहीं सबी दिन खेतों का संरक्षण करो तो खेति सबी लोगों का संस्कृति बनाया होगा। खाने के बिना कोई जीवजंतुवों क को धरती पर रह नहीं सकता। मनुष्य के बारे में

खेति के बिना खाना नहीं हो सकता है। प्रसिद्ध प्रकृति संरक्षक कल्लेन पोकुडन ने कहा था कि "खेति के बिना मानव को आगे बढ़ना मुश्किल है। यह बहुत सही बात है। पर केरल फल जैसे खानों के लिए अन्य संस्थानों का आश्रय कर रहा है।

•) प्राचीन काल के खेती :

प्राचीन काल में खेती मनुष्य अपने हाथ से करता था। कुछ समय घर के जानवरों का मदत से भी। खेती से मिली चीज़े अपने घर पर भोजन बनाकर खाते है। उस समय खेति सबका संस्कृति था। खेती के बिना ज़िंदगी को आगे बढाना मुश्किल था। प्रसिद्ध लेखक डि. शिवशंकर पिल्ल के लेखकों में प्राचीन केरल की खेती का विवरण है। पुरातन काल में नीच जाति वाले लोग ऊंच जाति वाले लोग के लिए काम करता था।

वर्तमान काल पर भारत के खेति तरीके :

सालों बढते समय मानव कि विज्ञान भी बढ रही है। मनुष्य के काम आसान होने के लिए कई-कई चीजों बनाते रहे है। नई खेति चीज़ों, नई खेती तरीके हो रहे है। 'पोली हौस' एक नई खेति तरीका है। ये तरीके से हमें एक पौधे को फ़टाफट से फल बना सकते हैं। पौली हौस से बडा हवा, पक्षी या जानवर को उस पौधा को नाष नहीं कर सकता। आधुनिक चीजों से मनुष्य का अबाव से भि खेती कर सकता है।

अभी सबी लोगों को खेती पर तात्पर्य नहीं है। सरकार लोगों को खेती के महत्व के बारे में बताना चाहिए। और खेति अपनी संसकृती बनाने का निरदेश देना चाहिए। 'मसनोबू फुकोका', 'एडवार्ड जेन्नर', जोशुवा बटरफ्लय ऐसे कही लोगो खेत और

पकृति के संरक्षण पर काम करा था।

·) खेति का उपयोग और महत्व :

खेति से एक इनसान को कई उपयोग है। खेत पर जाकर काम करने वाले लोग बहुत ताकत होगा। इसकेलिए कई गावाड़ है। खेत से मिले भोजन खा तो कोई बीमार नहीं पड़ेगा। अब कई आस्पताल में खाने के वजह से हुआ बीमार बहुत अधिक है। एक आरोग्यपूर्ण व्यक्ति को बीमारी से लड़ सकता हूँ। मेरा पिता के पिता खेत पर काम करता था। वो अभी सौ साल हो चुका हूँ। पर वो अभी भि अच्छे हालत पर है। खेति का उपयोग और महत्व इस घटने से हमे पता सकता हूँ। पुरातन काल में खेती के बिना एक इनसान भि केरल पर नहीं था। पर अभी खेतो को आग लगाते है पैसे के लिए।

भारत के प्रकृति संरक्षक एम.एस स्वामिनादन ने कहा ता कि "खेति हमे भविष्य समस्यावो से बचादेगी"। यह ~~बिलकु~~ बिलकुल सही होने वाला है। कई प्रदेशोवो में खेत के सहारा मानव जिंदगी आगे बढाते है। फलों, जोग्रा, बाजर नामक कई खाने चीजे हम खेतो से हि बनाते है। इसलिए खेति हमारा संस्कृति वाली प्रस्तावना बिलकुल सही।

भारत को खेति करने वाले लोगों को बढा सकता हूँ। पर हमारे सामने कई चुनौतियाँ है, पर हम यह सब चुनौतियों को तोडकर आगे ~~बढ~~ बढेगें। भारत एक विकासशील राष्ट्र है। इसलिए खेतों को भी विकास की जरूरत है। उम्मीद करता हुँ कि सभी खेति पर अपना सानिध्य दिखावूँ। और ~~भारत~~ खेति अपनी संस्कृति बनाकर आगे बढ़े।